

16-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - इस पुरानी दुनिया से बेहद के वैरागी बनो क्योंकि बाप तुम्हारे लिए नया स्वर्ग रूपी घर बना रहे हैं"





31-12-2004

इस वर्ष के आरम्भ से बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो, यही मुक्तिधाम के गेट की चाबी है



प्रश्नः- इस अविनाशी रूद्र यज्ञ में किन-किन बातों के कारण ही विघ्न पड़ते हैं?

उत्तरः- यह शिवबाबा का रचा हुआ अविनाशी रूद्र यज्ञ है, इसमें तुम मनुष्य से देवता बनने के लिए पवित्र बनते हो, भक्ति आदि छोड़ते हो इस कारण विघ्न पड़ते हैं। लोग कहते हैं -शान्ति हो, विनाश न हो और बाप ने यह रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा ही है पुरानी दुनिया के विनाश के लिए। इसके बाद ही शान्ति की दुनिया आयेगी।





ओम् शान्ति। ओम् शान्ति का अर्थ बाप ने बच्चों को समझाया है। अहम् आत्मा का स्वधर्म है शान्त। शान्तिधाम में जाने के लिए कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता है। आत्मा स्वयं शान्त स्वरूप, शान्तिधाम में रहने वाली है। यहाँ थोड़े समय के लिए शान्त रह सकते हैं। आत्मा कहती है मेरी कर्मेन्द्रियों का बाजा थक गया है। मैं अपने स्वधर्म में टिक जाता हूँ, शरीर से अलग हो जाता हूँ। परन्तु कर्म तो करना ही है। शान्ति में कहाँ तक बैठे रहेंगे। आत्मा कहती है - मैं शान्ति देश की रहवासी हूँ। सिर्फ यहाँ शरीर में आने से मैं टॉकी बना हूँ। अहम् आत्मा मम् शरीर है। आत्मा ही पतित और पावन बनती है। आत्मा पतित बनती है तो शरीर भी पतित बनता है क्योंकि सतयुग में 5 तत्व भी सतोप्रधान होते हैं। यहाँ 5 तत्व तमोप्रधान हैं। सोने में खाद पड़ने से सोना पतित बन जाता है। फिर उनको साफ करने के लिए आग में डाला जाता है। उनको योग अग्नि नहीं कहा जाता। योग अग्नि भी है, जिससे पाप जलते हैं। आत्मा को पतित से पावन बनाने वाला परमात्मा है। नाम ही एक का है। बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ। ड्रामा प्लैन अनुसार सबको पतित तमोप्रधान बनना ही है।



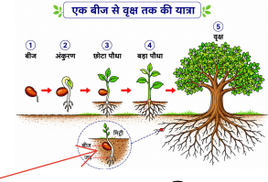






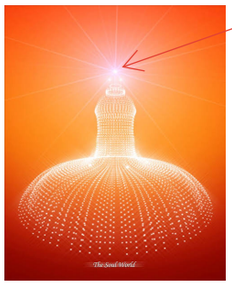
Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



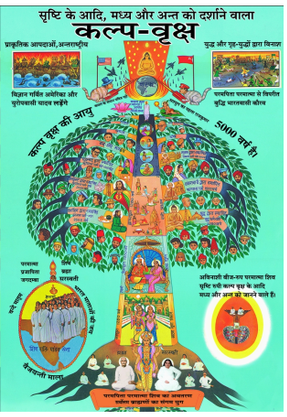


16-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

यह झाड़ है ना। उस झाड़ का बीज नीचे रहता है,

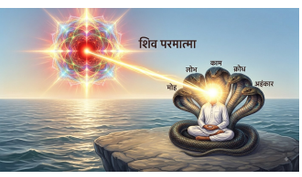


इनका बीज ऊपर में है। बाप को जब बुलाते हैं तो बुद्धि ऊपर चली जाती है। जिससे तुम वर्सा ले रहे हो वह अब नीचे आया हुआ है। कहते हैं मुझे आना पड़ता है। "मेरा जो यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है, यह अनेक वैराइटी धर्मों का है। अब वह तमोप्रधान पतित जड़जडीभूत अवस्था को पाया हुआ है।"





बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं सतयुग में पहले-पहले होते हैं देवी-देवतायें। अब कलियुग में हैं असुर। बाकी असुर और देवताओं की लड़ाई लगी नहीं। तुम इन आसुरी 5 विकारों पर योगबल से जीत पाते हो। बाकी कोई हिंसक लड़ाई की बात नहीं है। तुम कोई भी प्रकार की हिंसा नहीं करते हो। तुम किसको हाथ भी नहीं लगायेंगे। तुम डबल अहिंसक हो। काम कटारी चलाना, यह तो सबसे बड़ा पाप है। बाप कहते हैं यह काम कटारी आदि-मध्य-अन्त दु:ख देती है। विकार में नहीं जाना है। देवताओं के आगे महिमा गाते हैं - आप सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण





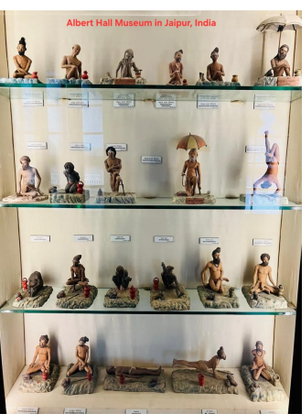




निर्विकारी। आत्मा इन आरगन्स द्वारा जानती है। कहते हैं कि हम पतित बन गये हैं तो जरूर कब पावन थे, जो कहते हैं हम पतित बने हैं। बुलाते भी हैं हैं पतित-पावन आओ। जब पावन हैं तब कोई बुलाते ही नहीं। उनको स्वर्ग कहा जाता है। यहाँ तो साधू-सन्त आदि कितनी धुन लगाते हैं पतित-पावन सीताराम... जहाँ भी जाओ गाते रहते हैं। बाप समझाते हैं कि सारी दुनिया पतित है। रावण राज्य है ना, रावण को जलाते हैं। परन्तु उनका राज्य कब से हुआ, किसको पता नहीं है। ढेर की ढेर भक्ति मार्ग की सामग्री है। कोई क्या करते, कोई क्या करते। संन्यासी भी कितने योग सिखाते हैं। वास्तव में योग किसको कहा जाता है - यह कोई को पता नहीं है। यह भी किसका दोष नहीं है। यह ड्रामा बना Ready-Made बनाया है। जब तक मैं न आऊं, इन्हों को अपना पार्ट बजाना है। ज्ञान और भक्ति, ज्ञान है दिन सतयुग त्रेता, भक्ति है रात द्वापर कलियुग फिर है वैराग्य। पुरानी दुनिया से वैराग्य। यह है बेहद का वैराग्य। उन्हों का है हद का वैराग्य। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया अब खत्म होने वाली है। नया घर बनाते हैं तो पुराने से वैराग्य हो जाता है।



रघुपति राघव राजाराम,
पतित पावन सीताराम
सुंदर विग्रह मेघश्याम,
गंगा तुलसी शालग्राम
भद्रगिरीश्वर सीताराम,
भगत-जनप्रिय सीताराम
जानकीरमणा सीताराम,
जयजय राघव सीताराम





Points: ज्ञान योग धारणा





Thank you so much मेरे मीठे बाबा...



देखो, बेहद का बाप कैसा है! तुमको स्वर्ग रूपी घर बनाकर देता है। स्वर्ग है नई दुनिया। नर्क है पुरानी दुनिया। नई सो पुरानी सो फिर नई बनती है। नई दुनिया की आयु कितनी है, यह किसको पता नहीं है। अभी पुरानी दुनिया में रह हम नई बनाते हैं। पुराने कब्रिस्तान पर हम परिस्तान बनायेंगे। यही जमुना का कण्ठा होगा, इस पर महल बनेंगे। यही देहली जमुना नदी पर होगी। बाकी यह जो दिखाते हैं पाण्डवों के किले थे। यह सब ड्रामा प्लैन अनुसार जरूर फिर भी बनेंगे। जैसे तुम यज्ञ तप दान आदि करते होंगे, यह फिर भी करना होगा। पहले शिव की भक्ति करते हो। फर्स्टक्लास मन्दिर बनाते हो, उनको अव्यभिचारी भक्ति कहा जाता है। अब तुम ज्ञान मार्ग में हो। यह है अव्यभिचारी ज्ञान। एक ही शिवबाबा से तुम सुनते हो जिसकी पहले तुमने भक्ति की, उस समय कोई और धर्म होते नहीं। उस समय तुम बहुत सुखी रहते हो। देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है। नाम लेने से मुख मीठा हो जाता

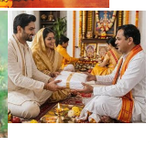




















Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



M.M.M.....imp. Point for Life time

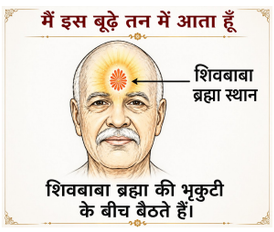
16-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

है। तुम एक बाप से ही ज्ञान सुनते हो। बाप कहते हैं और कोई से तुम मत सुनो। यह है तुम्हारा अव्यभिचारी ज्ञान। बेहद बाप के तुम बने हो। बाप से ही वर्सा मिलेगा। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप



Mind well so, don't waste your time

थोड़े समय के लिए साकार में आया हुआ है। कहते हैं मुझे तुम बच्चों को ही ज्ञान देना है। मेरा यह स्थाई शरीर नहीं है, मैं इसमें प्रवेश करता हूँ। शिव जयन्ती से फिर झट गीता जयन्ती हो जाती है। उनसे ज्ञान शुरू कर देते हैं। यह रूहानी विद्या सुप्रीम रूह दे रहे हैं। पानी की बात नहीं। पानी को थोड़ेही ज्ञान कहेंगे। पतित से पावन, ज्ञान से बनेंगे। पानी से थोड़ेही पावन बनेंगे। नदियां तो सारी दुनिया में हैं ही। यह तो ज्ञान सागर बाप आते हैं, इसमें प्रवेश कर नॉलेज सुनाते हैं। यहाँ गऊ मुख पर जाते हैं। वास्तव में गऊ मुख तुम चैतन्य में हो। तुम्हारे मुख से ज्ञान अमृत निकलता है। गऊ से तो दूध मिलता है। पानी की तो बात ही नहीं, यह सब कुछ बाप बैठ समझाते हैं। जो सबका सद्गति दाता है। अब सभी दुर्गति में पड़े हैं। आगे तुम नहीं जानते थे तो रावण को क्यों जलाते हैं। अब तुम जानते हो बेहद का दशहरा होने वाला है। यह सारी दुनिया बेट (टापू) है। रावण का राज्य

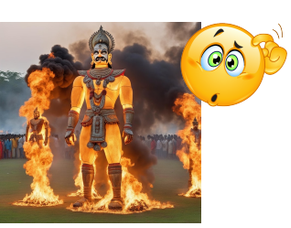








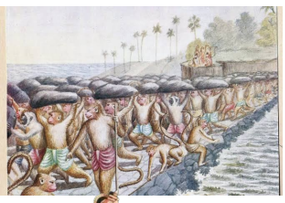








Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

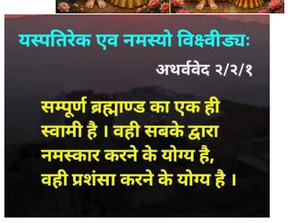










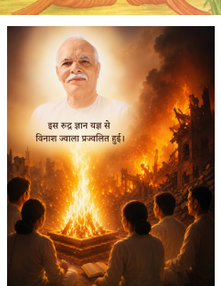




सारी सृष्टि पर है। जो शास्त्रों में है बन्दर सेना थी, बन्दरों ने पुल बनाई... यह सब हैं दन्त कथायें। भक्ति आदि चलती है, पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति, फिर व्यभिचारी भक्ति। दशहरा, राखी बन्धन सब अभी के ही त्योहार हैं। शिव जयन्ती के बाद होती है श्रीकृष्ण जयन्ती। अभी कृष्णपुरी स्थापन हो रही है। आज है कंसपुरी, कल होगी कृष्णपुरी। कंस आसुरी सम्प्रदाय को कहा जाता है। पाण्डव और कौरवों की लड़ाई है नहीं। श्रीकृष्ण का जन्म है सतयुग में, वह है फर्स्ट प्रिन्स। स्कूल में पढ़ने जाता है। जब बड़ा होता है तो राजगद्दी पर बैठता है। महिमा सारी शिवबाबा की है, जो पतितों को पावन बनाने वाला है। बाकी यह रास लीला आदि यह तो आपस में खुशी मनाते होंगे। बाकी श्रीकृष्ण किसको ज्ञान सुनाये, यह कैसे हो सकता है। बाबा कहते हैं -किसको मना नहीं करनी है कि भक्ति नहीं करो। आपेही छूट जाती है। भक्ति छोड़ते हैं, विकार छोड़ते हैं, इस पर ही हंगामा होता है। बाबा ने कहा है मैं रूद्र यज्ञ रचता हूँ, इसमें आसुरी सम्प्रदाय के विघ्न पड़ते हैं। यह है शिवबाबा का बेहद का यज्ञ, जिससे मनुष्य से देवता बनते हैं। गाया हुआ है ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रगट हुई।

M.M.M.....imp.





Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



जब पुरानी दुनिया का विनाश हो - तब तुम नई दुनिया में राज्य करेंगे। लोग कहते हैं हम कहते शान्ति हो, यह बी. के. कहते विनाश हो। ज्ञान न समझने के कारण ऐसा बोलते हैं। बाप समझाते हैं यह सारी पुरानी दुनिया इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जायेगी। Attention..! पुरानी दुनिया को आग लगने वाली है। नेचुरल कैलेमिटीज आयेगी, सरसों मुआफ़िक सब पीस कर खत्म हो जायेंगे। बाकी कुछ आत्मायें बच जायेंगी। आत्मा तो अविनाशी है। अब बेहद की होलिका होनी है, जिसमें शरीर सब खत्म हो जायेंगे। बाकी आत्मा पवित्र बनकर चली जायेगी। आग में चीज़ शुद्ध होती है। हवन करते हैं, शुद्धता के लिए। वह सब हैं जिस्मानी बातें। अब सारी दुनिया स्वाहा होने वाली है। विनाश के पहले जरूर स्थापना होनी चाहिए। किसको समझाओ पहले स्थापना फिर विनाश। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। प्रजापिता मशहूर है आदि देव, आदि देवी... जगत अम्बा के लाखों मन्दिर हैं। कितने मेले लगते हैं। तुम हो जगत अम्बा के बच्चे ज्ञान-ज्ञानेश्वरी, फिर बनेंगी राज-राजेश्वरी। तुम बहुत धनवान बनते हो। फिर भक्ति मार्ग में लक्ष्मी से दीपमाला पर विनाशी धन मांगते हैं। यहाँ





















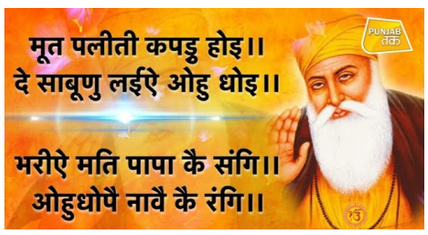




तुमको सब कुछ मिल जाता है आयुश्वान भव, पुत्रवान भव। वहाँ 150 वर्ष आयु रहती है। यहाँ तुम जितना योग लगायेंगे उतनी आयु बढ़ती जायेगी। तुम ईश्वर से योग लगाकर योगेश्वर बनते हो।









बाप कहते हैं मैं धोबी हूँ। सब मूत पलीती आत्माओं को साफ करता हूँ। फिर शरीर भी शुद्ध मिलेगा। मैं सेकेण्ड में दुनिया के कपड़े साफ कर लेता हूँ। सिर्फ मनमनाभव होने से आत्मा और शरीर पवित्र बन जायेंगे। छू मन्त्र हुआ ना। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति, कितना सहज उपाय है। चलते-फिरते सिर्फ बाप को याद करो और कोई जरा भी तकलीफ नहीं देता हूँ। अब तुम्हारी एक सेकेण्ड में चढ़ती कला होती है।







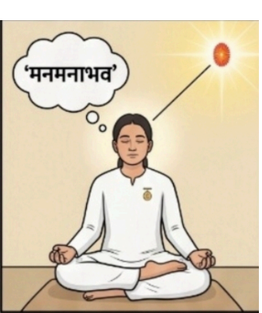
नाज उठाते हमें बिठाते, आप तो अपने कंधों पर
याद-प्यार दे करते नमस्ते, बली-बली जाते बच्चों पर
ऐसे प्यार का मधुरस पी के, सब रस लगते फीके हैं
मीठे बच्चे मीठे बच्चे बोल ये कितने मीठे है
मीठा हमे बनाते बाबा, आप बड़े ही मीठे है

बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों का सर्वेन्ट बनकर आया हूँ। तुमने बुलाया है- हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ तो सर्वेन्ट हुआ ना। जब तुम बहुत पतित बनते हो तो जोर से चिल्लाते हो। अब मैं आया हूँ। मैं कल्प-कल्प आकर बच्चों को मन्त्र देता हूँ कि मुझे याद करो। मनमनाभव का अर्थ भी यह











है। फिर विष्णुपुरी का मालिक बनेंगे। तुम आये हो विष्णुपुरी का राज्य लेने, रावण पुरी के बाद है विष्णुपुरी। कंसपुरी के बाद कृष्णपुरी। कितना सहज समझाया जाता है। बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया



से सिर्फ ममत्व मिटा दो। अब हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। यह पुराना चोला छोड़ हम जायेंगे नई दुनिया में। याद से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे, इतनी हिम्मत करनी चाहिए। अच्छा!

That's All











मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



धारणा के लिए मुख्य सार:-

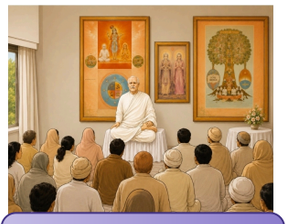






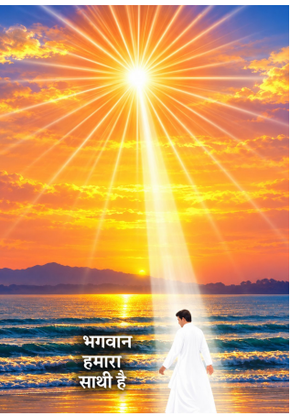
1) मुख से सदैव ज्ञान अमृत निकालना है। ज्ञान से ही सबकी सद्गति करनी है। एक बाप से ही ज्ञान सुनना है, दूसरों से नहीं।

ये तो पक्का कर लो..
Refer last page to understand why...?



No One Else





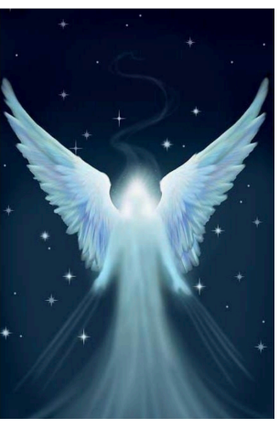
2) चढ़ती कला में जाने के लिए चलते-फिरते बाप को याद करने का अभ्यास करना है। (1) इस पुरानी दुनिया, (2) पुराने चोले से ममत्व मिटा देना है।



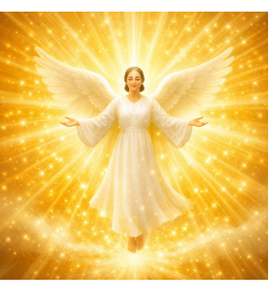


वरदानः- बुद्धि रूपी पांव द्वारा इस पांच तत्वों की आकर्षण से परे रहने वाले फरिश्ता स्वरूप भव





फरिश्तों को सदा प्रकाश की काया दिखाते हैं। प्रकाश की काया वाले इस देह की स्मृति से भी परे रहते हैं। उनके बुद्धि रूपी पांव इस पांच तत्व की आकर्षण से ऊंचे अर्थात् परे होते हैं।



ऐसे फरिश्तों को माया व कोई भी मायावी टच नहीं कर सकते।

**Conditions Applied Very strictly



लेकिन यह तब होगा **जब कभी किसी के अधीन नहीं होंगे।**

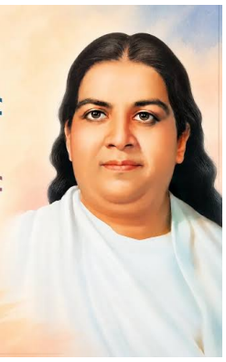


शरीर के भी अधिकारी बनकर चलना, माया के भी अधिकारी बनना, लौकिक वा अलौकिक संबंध की भी अधीनता में नहीं आना।



स्लोगनः- If शरीर को देखने की आदत है then तो लाइट का शरीर देखो, लाइट रूप में स्थित रहो।

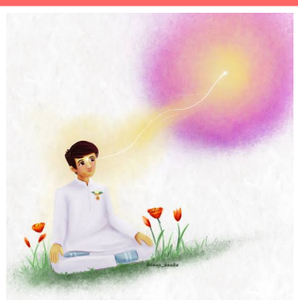


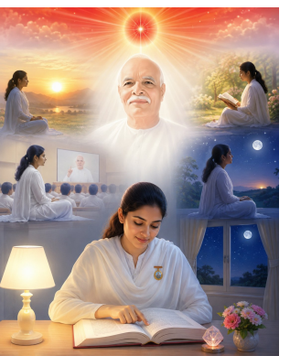


मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य -

"निरंतर ईश्वरीय याद की बैठक"

निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
निरन्तर का संधि विच्छेद निः + अन्तर होता है।





अब जब परमात्मा की याद में बैठते हो तो बैठने का मतलब क्या है? हमें सिर्फ परमात्मा की याद में बैठना नहीं है परन्तु अपनी ईश्वरीय याद तो नित्य चलते फिरते हर समय करनी है और याद भी उस वस्तु की रहती है जिसका परिचय हो। उसका नाम रूप क्या है, अगर हम कहें ईश्वर नाम रूप से न्यारा है तो फिर किस रूप को याद करें? अगर कहें ईश्वर सर्वव्यापी है तो उनकी व्यापकता तो सर्वत्र हो गई तो फिर याद किसको करें, अगर याद शब्द है तो अवश्य याद का रूप भी होगा। याद का मतलब है एक याद करने वाला, दूसरा जिसको याद करते हो तो जरूर याद करने वाला उनसे भी भिन्न है, तो फिर ईश्वर सर्वव्यापी नहीं ठहरा। अगर कोई कहे हम आत्मायें परमात्मा की अंश हैं तो क्या परमात्मा भी टुकड़ा टुकड़ा होता है। फिर तो परमात्मा विनाशी ठहरा! उनकी याद भी विनाशी हुई। अब इस बात को लोग

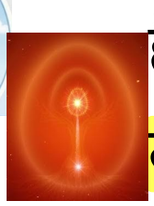
Simple Logic





नहीं जानते, परमात्मा भी अविनाशी है, हम उस अविनाशी परमपिता परमात्मा की संतान आत्मा भी अविनाशी हैं। तो हम वंश ठहरे न कि अंश। अब यह चाहिए नॉलेज, जो परमात्मा स्वयं आकर हम बच्चों को देते हैं। परमात्मा के हम बच्चों के प्रति महावाक्य हैं बच्चे, मैं जो हूँ जैसा हूँ उस रूप को याद करने से तुम मुझे अवश्य प्राप्त करोगे। अगर मैं दुःख सुख से न्यारा पिता सर्वव्यापी होता तो फिर खेल में सुख दुःख नहीं होता। तो मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ, मैं भी आत्मा सदृश्य आत्मा हूँ लेकिन सर्व आत्माओं से मेरे गुण परम हैं इसलिए मुझे परम आत्मा अर्थात् परमात्मा कहते हैं। अच्छा, ओम् शान्ति।





Point to be Noted

Point to ponder deeply...





ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो









Basic Requirements For Manmanabhav :-

मन्सा सेवा करने के लिए

(1) सर्व के प्रति सदा ही (constant/always) श्रेष्ठ और नि:स्वार्थ संकल्प हों,



(2) सदा पर उपकार की भावना हो।

अपकारी पर भी उपकार की श्रेष्ठ शक्ति हो।



(3) सदा दातापन की भावना हो।

(4) सदा स्व परिवर्तन, स्व के श्रेष्ठ कर्म द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले हो।



जो कर्म मैं करूंगा,
मुझे देख कर और भी करेंगे।

For Hosa Seva

अव्यक्त बापदादा: AV: 24/2/2002

जब तक हर ब्राह्मण आत्मा के स्वयं की वृत्ति में *_कैसी भी आत्मा के प्रति_* वायब्रेशन निगेटिव है तो विश्व कल्याण प्रति वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैला नहीं सकेंगे।

यह पक्का समझ लो।

कितनी भी सेवा कर लो, रोज़ आठ-आठ भाषण कर लो, योग शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन *किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना निगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो।*

अच्छा वह खराब है, बहुत गलतियां करता है, बहुतों को दु:ख देता है, तो क्या आप उसके दु:ख देने में जिम्मेवार बनने के बजाए, उसको परिवर्तन करने में मददगार नहीं बन सकते?

दु:ख में मदद नहीं करना है, उसको परिवर्तन करने में आप मददगार बनो। अगर कोई ऐसी भी आत्मा है जो आप समझते हैं, बदलना नहीं है। चलो, आपकी जजमेंट में वह बदलने वाली नहीं है, लेकिन नम्बरवार तो हैं ना! तो आप क्यों सोचते हो यह तो बदलने वाली है ही नहीं।

(Most imp) *आप क्यों जजमेंट देते हो, वह तो बाप जज है ना।* आप सब एक दो के जज बन गये हो। बाप भी तो देख रहा है, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं....।

ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा कैसी भी बार-बार गलती करने वाली आत्मा रही लेकिन बापदादा (विशेष साकार रूप में ब्रह्मा बाप) ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। दो चार कडुवे और बाकी मीठे...क्या ऐसे कहा? फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा *रहमदिल बने। क्षमा के सागर बने।* लेकिन अच्छा आपने अपनी वृत्ति में किसी के प्रति भी अगर निगेटिव भाव रखा, तो इससे आपको क्या फायदा है? अगर आपको इसमें फायदा है, फिर तो भले रखो, छुट्टी है। अगर फायदा नहीं है, परेशानी होती है..., वह बात सामने आयेगी। बापदादा देखते हैं, उस समय उसको आइना दिखाना चाहिए।

तो जिस बात में अपना कोई फायदा नहीं है, नॉलेजफुल बनना अलग चीज़ है, नॉलेज है - यह रांग है, यह राइट है। नॉलेजफुल बनना रांग नहीं है, लेकिन *वृत्ति में धारण करना यह रांग है* क्योंकि अपने में ही मूड आफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकसान होता है।

जब प्रकृति को भी आप पावन बनाने वाले हो तो यह तो आत्मायें हैं।

वृत्ति, वायब्रेशन और वायुमण्डल तीनों का सम्बन्ध है।

वृत्ति से वायब्रेशन होते हैं,

वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है।

लेकिन *मूल है वृत्ति।*

अगर आप समझते हो कि जल्दी-जल्दी बाप की प्रत्यक्षता हो *तो*

तीव्रगति का प्रयत्न है सब *अपनी वृत्ति को अपने लिए, दूसरों के लिए पॉजिटिव धारण करो।* नॉलेजफुल भले बनो लेकिन अपने मन में निगेटिव धारण नहीं करो। निगेटिव का अर्थ है किचड़ा।

अभी-अभी वृत्ति पावरफुल करो, वायब्रेशन पावरफुल बनाओ, वायुमण्डल पावरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है,

वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है, होता है लेकिन बहुत धीमी गति से। (mind very well)

अगर आप फास्ट गति चाहते हो तो नॉलेजफुल बन,

क्षमा स्वरूप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो।

If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।
और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010
Revise: 14/06/2026



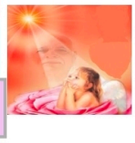
अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें



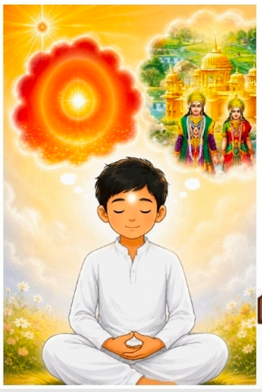
(क) जो बाप का मुख्य फ़रमान है **बच्चे, अमृतवेले उठ कर बाप को याद करो, इस मुख्य फ़रमान को पालन कर सवेरे-सवेरे फ्रेश हो। मुकर्रर टाइम पर याद की यात्रा में रहो, सपूत वा फ़रमानवरदार बनो** तब जाकर राजा बनेंगे। कपूत बच्चे तो झाड़ू लगायेंगे। तकदीरवान बच्चे सवेरे-सवेरे उठ कर बाप को बहुत प्यार से याद करेंगे, बाबा से मीठी-मीठी बातें करेंगे। पास विद् ऑनर होने का पुरुषार्थ कर स्वयं को राजाई के लायक बनायेंगे। बाप से जितना प्रीत-बुद्धि होंगे उतना फिर ऊँच पद पायेंगे। इसलिए सवेरे उठ कर बहुत प्यार से बाप को याद करना है। भल प्रेम के आँसू भी आयें क्योंकि बहुत समय के बाद बाप आकर मिले हैं। अब याद की रफ्तार तेज होनी चाहिए। **तेज याद करने वाले का ही ऊँच नाम होगा। वही विजयमाला का दाना बनेंगे।**





(ख) बच्चे, रात को बाप और वर्से को याद करते, स्वदर्शन चक्र फिराते जब







देखो नींद आती है, तो सो जाओ। फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी। फिर सवेरे-सवेरे उठेंगे तो वही प्वाइन्टस याद आती रहेंगी। ऐसे **अभ्यास करते-करते तुम नींद को जीतने वाले बन जायेंगे।** जो करेगा सो पायेगा। करने वाले का देखने में आता है, चलन प्रसिद्ध होती है। नींद को जीतने वाले बनो, तो तुम बाप के नज़दीक आते जायेंगे।

(ग) बच्चों को समझाया जाता है कि दूसरों को करेन्ट देना है, तो रात्रि को भी जागो, सवेरे उठ कर जितना बाप को याद करेंगे उतना कशिश होगी, बाबा भी लाइट देंगे।



माया को कैसे जाने...?

गीता के 7वें अध्याय के 14 श्लोक में यह संपूर्ण स्पष्ट रीति बताया है कि अगर त्रिगुणी माना सतो रजो तमो गुण से निर्मित माया को जानना है तो हमें परमात्मा अर्थात शिव बाबा की शरण में संपूर्ण समर्पण होकर चलना होगा - ये एकमात्र उपाय है

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥
क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥

दूसरे शब्दों में ...
मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है।
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥
हे भारत! तू सब प्रकारसे उस परमेश्वरकी ही शरणमें* जा। उस परमात्माकी कृपासे ही तू परम
* लज्जा, भय, मान, बड़ाई और आसक्तिको त्यागकर एवं शरीर और संसारमें अहंता, ममतासे रहित होकर केवल एक परमात्माको ही परम आश्रय, परमगति और सर्वस्व समझना तथा अनन्यभावसे अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमपूर्वक निरन्तर भगवान्‌के नाम, गुण, प्रभाव और स्वरूपका चिन्तन करते रहना एवं भगवान्‌का भजन, स्मरण रखते हुए ही उनके आज्ञानुसार कर्तव्यकर्मोंका निःस्वार्थभावसे केवल परमेश्वरके लिये आचरण करना यह 'सब प्रकारसे परमात्माके ही शरण' होना है।

* अध्याय १८ * २३९

शान्तिको तथा सनातन परमधामको प्राप्त होगा॥ ६२॥

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥
२४० * श्रीमद्भगवद्गीता *

सम्पूर्ण धर्मोंको अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मोंको मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार परमेश्वरकी ही शरणमें आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर॥ ६६॥



दूसरे किसी को भी क्यों फॉलो नहीं करना है।

जो भी आत्माएं हमें माया के बारे में या किसी भी ज्ञान के राज की स्पष्टता के बारे में कुछ भी समझाएंगे उसमें कुछ ना कुछ तो त्रुटि रह ही जाएगी

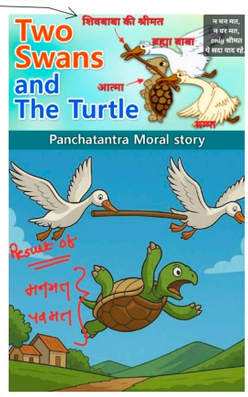
अब इसमें हम दो उदाहरण लेते हैं

पहला उदाहरण:

मान लो कि एक ब्राह्मण आत्मा जिसको नाम मान शान की कोई भी इच्छा नहीं है उस को 97% या 99% मालूम पड़ चुका है की माया क्या है (100% क्यों नहीं? क्योंकि अभी कोई भी संपूर्ण नहीं बना है ब्रह्मा बाबा के सिवाय)

तो अब यह आत्मा आपको अपने सच्चे दिल से निस्वार्थ भाव से आपको जो कुछ भी समझाएगी वह ऐसा होगा जैसे की मान लो कोई 12वीं कक्षा का विद्यार्थी दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी को मैथमेटिक्स के 12 वीं कक्षा के Problems को समझाता हो जो कि उसने पहली कक्षा से लेकर 11वीं कक्षा तक को अपने बल बूते पर पार करके सब कुछ अर्जित करके अब 12वीं कक्षा में पहुंचा है(उसकी खुद की कमाई)
लेकिन वह दूसरी कक्षा का विद्यार्थी बेचारा उसको कैसे ग्रहण कर सकेगा क्योंकि उसकी बुद्धि वहां तक पहुंची ही नहीं है व पहुंच ही नहीं सकती

दूसरा कि वह जो अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा हमें समझा रही है उनकी अपूर्णता भी अर्थात उनमें जो कमी कमजोरीया है वो भी हमारे अंदर unconsciously transfer होकर घर करती जाती है - फिर उसको निकालने के लिए अलग से मेहनत करनी पड़ेगी और अब हमारे पास समय है कहां....?
साथ ही जब हम उस आत्मा से सुनते हैं तो उस आत्मा की याद ना चाहते हुए भी हमको आ ही जाती है। जबकि हमारा लक्ष्य यह है कि निरंतर शिव बाबा की ही याद रहे। निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
Constant/ without any break or interruption
और सबसे बड़ी बात
जरा सोचो कि दूसरों को (अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा) फॉलो करते-करते अगर यह शरीर छोड़ना पड़े तो अंत मति सो गति क्या होगी?
हमको ऐसा लगता है कि उसमें क्या है अंत में तो हम बाबा को याद करते ही शरीर छोड़ेंगे
लेकिन नहीं, "बहुत काल का अभ्यास ही अंत में काम में आयेगा एवं अंत में किसी भी देहधारी की याद ना हो सिवाय एक बाबा के" - भगवानुवाच



तो इसीलिए एक बार थोड़ा सा भी निश्चय हो जाने के बाद हमें मुरली को ही अपना आधार बनाना है

क्योंकि मुरली पढ़ते हैं तो वह मुरली है शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा का मन और उनके मन से ही तो यह संपूर्ण ब्रह्मांड/माया क्रिएट हुई है एवं वह दोनों 100% है तो उनके द्वारा जो भी श्रीमत मिलेगी वह हमें 100% बनाएगी- रिंचक मात्र भी त्रुटि नहीं।

100 % Advantage in All Aspects

इसीलिए जब हम मुरली पढ़ते हैं तो हमारा मन भी बापदादा के साथ ऑटोमेटेकली ही जुड़ जाता है जिससे कि उनकी याद स्वतः ही रहती है और याद के कारण हमारे विकर्म दग्ध होते है और इसी के चलते हमारी बुद्धि की जो ग्रहण शक्ति है वह बढ़ती है एवं धारणा भी स्वतः ही होती जाती है जिसके अंतिम फल स्वरूप माया को हम संपूर्ण रीति समझ जाते हैं

यह तो दुनिया में भी कहते हैं कि अगर किसी दुश्मन को जीतना है तो सबसे पहले उस दुश्मन की स्ट्रैंथ और वीकनेस - इसको जानना चाहिए अर्थात दुश्मन को जानना चाहिए अगर दुश्मन को जान लिया तो उसको हराना कोई बड़ी बात नहीं।

फिर पुजारी बनते हो। तो पहली बात है, बाप को याद करो। बाप को याद करने का अभ्यास करने से धारणा होगी। एक के साथ प्रीत नहीं है तो फिर और और के साथ लग जाती है। ऐसी-ऐसी

और यह हमेशा याद रहे की जो हम खुद अपने बलबूते पर कमाते हैं वही साथ में रहता है इसीलिए मीठे बाबा कहते हैं कि अपनी घोट तो नशा चढ़े
किसी के द्वारा दिया गया कुछ भी Temporary खुशी तो देगा लेकिन वह अपनी कमाई नहीं है इसीलिए वह खुशी स्थाई नहीं रहेगी

दूसरा उदाहरण:

आजकल यह दूसरे उदाहरण वाली कैटेगरी की आत्माये ज्यादा देखने में आती हैं जिनको ज्ञान की सच्ची गहराई क्या है वो पता ही नहीं है लेकिन नाम मान शान के चक्कर में (मुझे सब पहचाने, मेरी महिमा करें आदि आदि...) कुछ भी ज्ञान देते रहते हैं जो कि हमें बाबा से दूर करते हैं
अब सोचो कि, उनसे वो अपूर्ण देह अभियान युक्त ज्ञान हमने लिया तो उसकी result एक तो समय हमारे पास already कम है वो अमूल्य समय व्यर्थ चला गया और दूसरा कि वह अधूरा ज्ञान हमको बाबा से/लक्ष्य से ओर ही दूर ले जाएगा और इतने में ही समय समाप्त हो गया तो...? (चाहे स्वयं का शरीर छूट जाए या विनाश हो जाए - किसी भी रीति से)

Point to ponder deeply...

संपूर्णता की मंजिल तक कौन पहुंच नहीं सकता अर्थात किसको धर्मराज के सामने सर झुकाना पड़ेगा।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥
क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥
दूसरे शब्दों में ...
मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है। Impossible
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

जो ब्राह्मण आत्माए भगवान के सामने तर्क देती है वह आत्माए कभी भी संपूर्णता की मंजिल तक नहीं पहुंच सकती फिर चाहे उसको कल्प कल्पांतर का भी समय क्यों ना मिले। वास्तव में हमारे पास तो यह संगम युग का छोटा सा समय ही है उसमें भी 90 साल से भी ज्यादा समय तो बीत चुका है।

उनमें भी वह ब्राह्मण आत्माएं जो अपनी कमी कमजोरी के कारण, अपने देह अभिमान वा अहम कार के कारण बाबा जो श्रीमत जिस संदर्भ और जिस भाव से एकदम Crystal clear कर के दे रहे है उस श्रीमत को वैसे का वैसा फॉलो नहीं कर सकती है(माया का सामना करने में अक्षम है)तो वो क्या करती है..?
उस श्रीमत को फॉलो करने के बजाय भगवान को ही, उल्टा उनके सामने, उन्होंने किसी और मुरली में, किसी और संदर्भ से, जो श्रीमत कही है उस श्रीमत का छोटा सा टुकड़ा लेकर स्वयं भगवान/महाकाल को तर्क देकर उस crystal clear श्रीमत को कट करती हैं - अपनी होशियारी/बुद्धिमानी दिखाती है और महाकाल की श्रीमत को कट करती हैं।

अब सोचो, इन आत्माओं को क्या कहेंगे और इन आत्माओं की गति क्या होगी?



अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना

